International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 559-561

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 559-561
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2017
Accepted: 28-12-2017

सुमन कुमारी
शोधप्रज्ञा, विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सुमन कुमारी
शोधप्रज्ञा, विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

अन्तर पीढ़ी संघर्ष का सामाजिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक कारण : एक अध्ययन

सुमन कुमारी

सारांश
नयी एवं पुरानी या युवा एवं वृद्ध पीढ़ी के विचारों का अन्तर अन्तर–पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण है। दोनों पीढ़ियों के मूल्यों, विश्वासों तथा व्यवहार प्रतिमान में काफी अन्तर पाया जाता है। इसका मुख्य कारण दोनों ही पीढ़ियों के समाजीकरण में समय का अन्तर है। दोनों ही पीढ़ियों का समाजीकरण अलग–अलग समय में होता है। जैसे एक परिवार के माता–पिता एवं उसका पुत्र। किसी भी परिवार के माता–पिता एवं पुत्र के विचारों में काफी अन्तर पाया जाता है क्योंकि दोनों ही पीढ़ियों का समाजीकरण अलग–अलग समय में हुआ है। मिडिया युक्त जिस माहौल में आज का युवा पीढ़ी पल–बढ़ रहे हैं शायद उनके माता–पिता को वैसा माहौल नहीं मिला हो, इसलिए दोनों के विचारों में अन्तर होना स्वाभाविक है।

प्रस्तावना
आज का नवयुवक अपने प्रत्यनों से आगे बढ़ना चाहता है, कुछ स्वतन्त्रता चाहता है, अपने लिए स्वयं कुछ निर्णय लेना चाहता है। वह पुरानी पीढ़ी की तुलना में उदार और मानवतावादी दृष्टिकोण से सोचने लगा है। आधुनिक शिक्षा, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति ने उसके जीवन मूल्यों को बहुत कुछ प्रभावित किया है। औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रक्रियाओं ने भी व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र और सामाजिक दृष्टि से उदार बनाया है। सह–शिक्षा तथा स्त्री–पुरुषों के विविध क्षेत्रों में साथ–साथ काम करने से रोमांस पर आधारित प्रेम विवाहों का महत्त्व बढ़ा है। नयी पीढ़ी का युवक जाति–पाति के बन्धनों की चिन्ता नहीं करते हुए मनचाही लड़की से विवाह करना चाहता है। जहाँ परिवार, जाति और समाज के लोग इसमें बाधक बनते हैं, वहाँ संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी पुरानी मान्यताओं के अनुसार अपनी सन्तानों को व्यवहार करते देखना चाहती है जबकि नवीन पीढ़ी के युवक अपने स्वयं के मूल्यों, अभिवृत्तियों एवं विश्वासों के आधार पर कार्य करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप पुरानी और नवीन पीढ़ी में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है।
आज के युवा को पाश्चात्य संस्कृति, आधुनिक शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण ने काफी प्रभावित किया है। आज सहशिक्षा ने स्त्री–पुरुष के अन्तर को बहुत कम कर दिया है। विवाह के संबंध में देखे तो पुरानी पीढ़ी के सदस्यों का विवाह अपनी ही जाति में अधिकांशतः उनके माता–पिता द्वारा करवाया गया है, लेकिन आज की पीढ़ी जाति के बंधनों को नहीं मान रही है। वह आज अपनी पसन्द के अनुसार विवाह करना चाहते हैं, ऐसे में जहाँ पुरानी पीढ़ी के लोग बाधक बनते हैं। वही नयी एवं पुरानी पीढ़ी के मध्य संघर्ष की स्थिति बन जाती है।
आज का युवा अधिक स्वतंत्रता चाहता है, अपने हर फैसले को वह स्वयं की इच्छानुसार पूरा करना चाहता है जबकि पुरानी पीढ़ी के लोग पुरानी मान्यताओं के अनुसार अपने बच्चों को व्यवहार करते देखना चाहते हैं। यहीं से पुरानी पीढ़ी तथा नई पीढ़ी के संघर्ष की शुरूआत होती है और धीरे–धीरे संघर्ष बढ़ता जाता है।
अन्तर पीढ़ी संघर्ष के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं–

1. सामाजिक संरचना में तीव्र परिवर्तन : अन्तर पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण आधुनिक युग में सामाजिक संरचना में होने वाला परिवर्तन है। इस तीव्र परिवर्तन के परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी तो अपने मूल्यों को सरलता से बदल लेती है, जबकि पुरानी पीढ़ी अपने मूल्यों को नहीं छोड़ पाती। इससे दोनों पीढ़ियों में पाए जाने वाले मूल्यों में अन्तर होने लगता है तथा इनमें अन्तराल बढ़ता जाता है। यह अन्ततः अन्तर–पीढ़ी संघर्ष को जन्म देता है। किंग्सले डेविस ने सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तन को समाज में अन्तर–पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण माना है। इनका कहना है कि अत्यधिक तीव्र सामाजिक परिवर्तन युवाओं एवं उनके माता–पिताओं में संघर्ष को बढ़ावा देता है। इसी के परिणामस्वरूप अनेक युवाओं ने अपने परिवारों से विद्रोह कर दिया है।

2. पारिवारिक संरचना में परिवर्तन एवं विघटन : आधुनिक युग में औद्योगिकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण इत्यादि परिवर्तन की प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार की संरचना में भी अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों से संयुक्त परिवार में कर्ता की सर्वोच्च स्थिति को झकझोर कर रख दिया है। नवीन पीढ़ी कर्ता की निरंकुश सत्ता में नहीं रहना चाहती। इसलिए नवीन पीढ़ी के लोग कर्ता के आदेशों एवं निर्णयों को नहीं मानते हैं। इससे केवल कर्ता की भावनाओं को ही ठेस नहीं पहुँचती अपितु इससे अन्तर–पीढ़ी संघर्ष को भी प्रोत्साहन मिलता है।

3. मानदण्डों (आदर्शों) एवं मूल्यों में संघर्ष : परिवर्तन की प्रक्रियाएँ समाज के पुरातन एवं नवीन आदर्शों एवं मूल्यों से संघर्ष की स्थिति पैदा कर देती है। इससे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामुदायिक तथा सामाजिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है। क्योंकि अन्तर–पीढ़ी संघर्ष परिवार से प्रारम्भ होता है, इसलिए आदर्शों एवं मूल्यों में पाया जाने वाला यह संघर्ष सम्पत्ति, विवाह अथवा पेशे में संबंधित हो सकता है।

4. पारस्परिक विश्वास की कमी : जब विभिन्न पीढ़ियों में पाया जाने वाला विश्वास कम होने लगता है तो अन्तर–पीढ़ी संघर्ष विकसित हो जाता है। पुरानी पीढ़ी नहीं मानती है कि नयी पीढ़ी अपने उत्तरदायित्व में उनसे कहीं पीछे है। नयी पीढ़ी के लोग 'ईजी गोइंग' के दर्शन को अपनाने वाले हैं, वे कम ईमानदार हैं तथा इतने बहादुर स्पष्टवादी नहीं है जितने कि पुरानी पीढ़ी के लोग। इसके विपरीत, नयी पीढ़ी के लोग पुरानी पीढ़ी के लोगों को आउट ऑफ डेट, पुराने फैसन के तथा दकियानूसी विचारों को मानते हैं। वे समझते हैं कि हमे हर बात पर रोका–टोका जाना इन्हीं दकियानूसी विचारों का परिणाम है। यह अविश्वास की स्थिति अन्तर पीढ़ी संघर्ष को जन्म देती है।

5. दोषपूर्ण समाजीकरण : दोषपूर्ण समाजीकरण को भी अन्तर–पीढ़ी संघर्ष का एक कारण माना गया है। कई बार माता–पिता नौकरी करने के कारण अथवा अन्य किसी कारणवश अपने बच्चों का समाजीकरण ठीक प्रकार से नहीं कर पाते हैं। वे अपने बच्चों के कार्यों पर उस प्रकार का नियंत्रण नहीं रख पाते जिस प्रकार का नियंत्रण उन्हें उचित मार्ग–दर्शन हेतु अनिवार्य होता है। ऐसी स्थिति में बच्चे माँ–बाप के नियंत्रण से दूर होते जाते हैं, उनके एवं माँ–बाप के मूल्यों के परस्पर विरोध विकसित होने लगता है तथा वे एक–दूसरे से अलग दृष्टिकोण अपनाने लगते हैं। इससे अन्तर पीढ़ी संघर्ष की वृद्धि होती है।

6. पश्चिमी संस्कृति : पश्चिमी संस्कृति को भी अन्तर पीढ़ी संघर्ष के एक स्रोत के रूप में देखा गया है। स्वयं पश्चिमी देशों में तो अन्तर–पीढ़ी संघर्ष पाया ही जाता है, परन्तु जो देश पश्चिमीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप पश्चिमी संस्कृति के आदर्शों एवं मूल्यों को अपनाते हैं उनसे भी यह समस्या प्रसारित हो जाती है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव सर्वाधिक युवा पीढ़ी पर पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी अपने आपको अधिक आधुनिक मानने लगते हैं। युवा परम्परागत पारिवारिक संरचना, सामुदायिक मूल्यों तथा समाज में प्रचलित मान्यताओं को अपनी आकांक्षाओं को पूरा न करने का दोष देते हैं। वे इसे बदलना चाहते हैं जबकि पुरानी पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति से अपेक्षाकृत कम प्रभावित होने के कारण पुरातन व्यवस्था को बनाए रखना चाहती है। दोनों पीढ़ियों में पाया जाने वाला यह द्वन्द्व अन्ततः अन्तर–पीढ़ी संघर्ष का कारण बन जाता है।

7. नगरीकरण एवं औद्योगीकरण : नगरीकरण एवं औद्योगीकरण ऐसी जुड़वाँ प्रक्रियाएँ है जो किसी भी समाज में बहुआयामी परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। इनसे पारिवारिक, सामुदायिक तथा सामाजिक संरचना इतना अधिक प्रभावित होती है कि परम्परागत मूल्यों को बनाए रखना कठिन हो जाता है। इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप होने वाले परिवर्तनों से नवीन पीढ़ी तो शीघ्रता से प्रभावित हो जाती है, परन्तु पुरानी पीढ़ी पर इनके द्वारा जनित परिवर्तन का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। मूल्यों में परिवर्तन अन्तर–पीढ़ी संघर्ष को विकसित करता है।

8. पीढ़ियों में शिक्षा की दृष्टि से अन्तराल : अन्तर–पीढ़ी संघर्ष उन परिवारों अथवा समुदायों में अधिक पाया जाता है जिनमें दो पीढ़ियों में शिक्षा की दृष्टि से काफी अधिक अन्तर पाया जाता है। नवीन पीढ़ी शिक्षा के परिणामस्वरूप अपने दृष्टिकोण में अधिक आधुनिक, तार्किक व वैज्ञानिक बन जाती है, जबकि पुरानी पीढ़ी परम्परावादी व्यवस्था से बाहर नहीं निकल पाती है। नयी पीढ़ी के लोग सोचते हैं कि पढ़े–लिखे होने के कारण वे पुरानी पीढ़ी के लोगों से अधिक जानकारी रखते हैं। यह बात पुरानी पीढ़ी के लोग मानने को तैयार नहीं है। वे सोचते हैं कि जितना अनुभव उनके पास है उतना ज्ञान नयी पीढ़ी को नहीं है। सिर्फ शिक्षा द्वारा नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी जितना अनुभव जनित ज्ञान नहीं ले पाते। इस प्रकार दोनों पीढ़ियों के सदस्यों के दृष्टिकोण में पाया जाने वाला परस्पर विरोध अन्तर–पीढ़ी संघर्ष को जन्म देता है।

9. पुरानी पीढ़ी का नयी पीढ़ी पर दोषारोपण : प्रत्येक पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को बिगड़ी हुई पीढ़ी मानकर उस पर अनेक प्रकार का दोषारोपण करती है। आचार्य रजनीश कहते हैं कि उन्होंने दुनिया की पुरानी किताब देखी है और उसे देखकर हैरान हो गए हैं। उन्हीं के शब्दों में, चीन में संभवतरू दुनिया की सबसे पुरानी किताब है, जो साढ़े छह हजार वर्ष पुरानी है और उस किताब की भूमिका में लिखा हुआ है कि आज के लोग बिल्कुल गिड़ गए हैं, पहले के लोग बहुत अच्छे थे। मैं बहुत हैरान हुआ कि आज तक जमीन पर एक भी किताब ऐसी नहीं है जिसमें यह लिखा हो आजकल के लोग अच्छे हैं परन्तु यह केवल मिथ्या तथ्य है। आचार्य रजनीश ठीक कहते हैं कि यदि पहले के लोग अच्छे थे तो ढाई हजार वर्ष पहले बुद्ध ने किन लोगों को सिखाया था कि चोरी मत करो, झूठ मत बोलो, हिंसा मत करो। कृष्ण, बुद्ध और कन्यफ्यूशियस किनके लिए रोए थे? ये किनसे कहते रहे कि तुम अच्छे हो जाओ? वास्तविकता यह है कि बीते हुए कल के विद्रोही आज की नून–तेल, लकड़ी के फेर में उलझे, थके सुरक्षा की तलाश में आने वाली कल की पीढ़ी की आलोचना में लग जाते हैं।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक सामंजस्य की समस्याएँ :

वृद्धों को सामाजिक एवं सांस्कृति सामंजस्य की समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। उन्हें बहुधा परिवार में रहने की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यह कीमत उन्हें अपने आदर्शों से समझौता करने, अकेले रहने के लिए तथा फुर्सत के समय को भी अपनी इच्छा से व्यतीत न करने के लिए विवश कर देती हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक सामंजस्य की समस्याओं को निम्नलिखित तीन रूपों में देखा जा सकता है–

(क) अकेलेपन की समस्या : वृद्धों की सबसे प्रमुख समस्या अकेलेपन की हैं। आयु बढ़ने के साथ ही व्यक्ति में अकेलेपन की भावना घर करने लगती हैं। ऐसा देखने में आया है कि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी बहुत से वृद्धजन अकेलेपन के कारण डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। अनेक अध्ययनों से पता चलता है कि औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय समाज की परम्परागत संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर हो गई है। इसके फलस्वरूप परिवार तथा समाज के ढाँचे में

वृद्धजन अवांछनीय हो गए हैं जिससे उनमें अकेलेपन की भावना विकसित होने लगी है। वृद्धजनों में अकेलेपन का भाव बहुत गहरा होता है क्योंकि हो सकता है कि उनके जीवनसाथी की मृत्यु हो चुकी हो, उनके मित्र किसी दूसरी जगह चले गए हों या मृत्यु हो गयी हो, उनके बच्चे किसी दूर के शहर में बस गए हों या वे स्वयं बीमार रहते हों। अकेलेपन का भाव वृद्धजनों में आत्म–सम्मान एवं विश्वास की कमी करता है तथा वे सारा दिन अपनी बदहाली के बारे में सोच कर ही व्यतीत कर देते हैं।

(ख) सामाजिक असुरक्षा की समस्या : प्रत्येक व्यक्ति समाज में तभी काम सुचारू रूप से कर सकता है जब उसे सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध हो। भारत में परम्परागत रूप में संयुक्त परिवार एक ऐसी संस्था मानी जाती रही हैं जिसका कार्य अपने सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना रहा है। संयुक्त परिवार में कोई भी सदस्य, चाहे वह किसी भी आयु वर्ग का क्यों न हो अपने आप को न तो अकेला मानता है और न ही किसी प्रकार से असुरक्षित महसूस करता है। परन्तु पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण एवं नगरीकरण जैसी बहुआयामी प्रक्रियाओं ने संयुक्त परिवार की संरचना को छिन्न–भिन्न कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि आज संयुक्त परिवार अनेक एकाकी परिवारों में बँटते जा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति जिसे किसी शहर या औद्योगिक केन्द्र में नौकरी मिल जाती है वह अपनी पत्नी तथा बच्चों को वहीं ले जाता है तथा एक अलग 'एकाकी परिवारश की स्थापना कर लेता है। केवल वृद्ध ही बेवश एवं बेसहारा बच जाते हैं। जिनकी देखरेख करने वाला कोई नहीं होता है। इससे उनमें सामाजिक असुरक्षा की भावना का विकास होने लगता है।

(ग) मनोरंजन संबंधी समस्याएँ : वृद्धजनों की प्रमुख समस्या समय व्यतीत करने की होती है। अगर पड़ोस में कोई अन्य वृद्ध हैं अथवा मौहल्ले में चारदृपाँच वृद्ध हैं और उनमें आपस में काफी मेल–मिलाप है तो उनका समय सरलता से कट जाता है। यदि वे परिवार में रहने के ही आदी हैं तो उनके सामने सबसे बड़ी समस्या मनोरंजन की है। वृद्धों के लिए मनोरंजन का एकमात्र साधन रेडियो अथवा टेलीविजन है।

निष्कर्ष :

उपर्यक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि समाज में नई पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष चलता रहता है। वर्तमान समय में अंतरपीढ़ी संघर्ष काफी बढ़ गई है। वैश्वीकरण, संचार–साधन एवं सूचना तकनीक ने नई पीढ़ी के विचार, रहन–सहन में काफी परिवर्तन लाई है। नई पीढ़ी पर संस्कृतिग्रहण की क्षमता अधिक है। आज जातीय बंधन ढ़ीली पड़ गई है, छूआछूत एवं भेद–भाव में कमी आ रही है, अन्तर्जातीय विवाह या प्रेम विवाह में वृद्धि हुई है। पर्दा प्रथा खत्म हो रही है, महिलाएँ अब पुरुषों की तरह सभी तरह की रोजगार कर रही हैं। इन मुद्दों पर पुरानी पीढ़ी एवं नई पीढ़ी में मतभेद व संघर्ष होता है।

संदर्भ :

1. मैकाईबर एण्ड पेज (1949) : सोसायटी : एन इन्ट्रोडक्टरी एनालाइसीस, रेनहॉर्ट, न्यूयॉर्क, 1949, पृ.– 731
2. ए. डब्ल्यू. ग्रीन (1972) : सोशियोलॉजी, मैकग्रॉहील, न्यूयार्क, 1972, पृ.– 329
3. गिलिन एण्ड गिलिन (1961) : सोशियोलॉजी कल्चर, इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटिकल स्टडी, न्यूयार्क, पृ.– 184
4. किंग्सले डेविस (1949) : ह्यूमन सोसायटी, मैकमिलन एण्ड को, लन्दन, पृ.– 267
5. रॉबर्ट निपार्क (1967) : द सोसियोलॉजिकल ट्रेडिशन, हेनमैन, लंदन, पृ.– 312